P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-I*September-2015

प्रवासी भारतीय साहित्यकारों का हिन्दी साहित्य में योगदान

सेवंती डावर
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शासकीय महाविद्यालय,
सनावद, खरगोन

सारांश

प्राचीन काल से ही शांति, सहअस्तित्व एवं वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना भारतीय विदेशनीति का मूल्य मंत्र रहा है। 12वीं शताब्दी तक अनेक भारतीय ग्रंथों का विदेशों में अनुवाद किया गया, जिससे साहित्य में अभिवृद्धि हुई।

मारिशस के युवा साहित्यकार अनंत अभिमन्यु अपनी भाषा के प्रति गहरे लगाव का प्रकट करते हुए कहा है– ''मेरे दोस्त, उस भाषा में मेरे लिये शुभ की कामना मत कर, जिसकी गुलामी के दिनों की याद दे जाती है। चाबुक की बौछारों का आदेश निकलता था जिस भाषा में उस भाषा को मेरी भाषा मत कह मेरे दोस्त।''

विषय का अंत नही है बहुत कुछ लिखा और पढ़ा जा सकना शेष है। भारतीय साहित्य पर प्रभाव डालने वाले विदेशों में निवासरत् भाषाविद्, वैज्ञानिक, साहित्यकारों का हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं मे योगदान रहा है। जिससे निश्चित ही भारतीय साहित्य में अभिवृद्धि हुई।

मुख्य शब्द : वसुधैव कुटुम्बकम, मौलिक विज्ञान, दर्शन साहित्य, अंधविश्वास, सकीर्णता साहित्यिक पत्रिका, पांडुलिपि।

प्रस्तावना

कोई भी परम्परा अपने सुदीर्घ इतिहास के दौरान सृजन, आदान और प्रदान के अनेक विध–उद्यमों के जरिए विकसित होती है। आदान–प्रदान स्वयं भी सृजनात्मकता का तत्व लिये होते है।

विश्व मानव को निकट लाने का श्रेय आज के परिप्रेक्ष्य में विज्ञान भाषा और साहित्य को दिया जा सकता है। विज्ञान व्यक्तिवाद से समष्टिवाद में परिणत करता है। वही भाषा सेतु के रूप में एक–दूसरे को जोड़कर साहित्यिक, सांस्कृतिक पहचान दिलाती है। भारत बहुभाषी देश है। यहाँ अनेक समृद्ध प्रमुख भाषाऐं हैं। किन्त हिन्दी का स्वर भारत भूमि से उठकर विदेशों तक ग़जने लगा है। सन् 1975 में नागपुर में मारीशस के विद्वान शिवसागर रामगुलाम की अध्यक्षता में काका कालेकर ने विव्दतापूर्ण तर्को से हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा सिद्ध कर दिया था। कनाडा के विद्वान हरिशंकरजी भी हिन्दी को विश्व भाषा मानते है।

प्राचीन काल से ही शांति, सहअस्तित्व एवं वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना भारतीय विदेशनीति का मूल्य मंत्र रहा है। 12वीं शताब्दी तक अनेक भारतीय ग्रंथों का विदेशों में अनुवाद किया गया, जिससे साहित्य में अभिवृद्धि हुई।

आधी सदी से अधिक बीत चुके भारत का जिक्र केवल एक देश क रूप में नहीं वरन् एशियाई संदर्भ में किया जाना समीचीन होगा, क्योंकि सदी की शुरूआत से लेकर मध्य तक मौलिक विज्ञान, दर्शन साहित्य के क्षेत्र में यूरोपीय दृष्टि से मिलने वाली एशियाई चुनौती का प्रतिनिधित्व भारत ने ही किया था। सर सी.वी. रमन, सत्येन बोस, जगदीशचंद्र बस, श्रीनिवास रामनानुजम, महात्मा गाँधी, रविन्द्रनाथ टेगौर, विवेकानंद, सवपल्ली राधाकृष्णन जैसी महान विभूतियाँ साधारण व्यक्तित्व न होकर महान चिंतक थे। अल्बर्ट आईस्टीन जैसे पश्चिमी मनीषियों ने उनकी चिंतन पद्धति और उनके मौलिक विचारों को स्वीकार किया।

देश की आजादी की अगस्त क्रांति में प्रथम स्मृति दिवस पर लगभग 100 अमेरिकी साहित्यकारों, पत्रकारों, विचारकों ने भारतीय स्वाधीनता हेतु अपनी अपील पर अलबर्ट आईस्टीन, पर्ले बक, लुई फिशर, नार्मन टॉमस, एडगर स्त्रों, बेंडेल विस्की, जॉन गंथर, अप्टन सिनक्लेअर आदि के हस्ताक्षर करवाकर समर्थन किया था।

विश्व के विविध देशों में बसे भारतीयों में मजदूर, व्यापारी, डॉक्टर, इंजीनियर, प्रबंधक, वैज्ञानिक, शिक्षक आदि में प्रतिभाशाली साहित्यकार भी है,

जिन्होंने अपनी लेखनी द्वारा भारतीय संस्कृति एवं साहित्यिक धरोहर को सुरक्षित रखा है।

भारत की आजादी के पूर्व से ही ब्रिटेन में प्रवासी भारतीय डॉ. धनीराम प्रेम ने हिन्दी में रचनात्मक साहित्य लेखन की शुरूआत की। धनीराम की चर्चित कहानियाँ– प्राणेश्वरी, विरागना पन्ना, वल्लरी, बहन, लाल जूता, देवी, चलता पुर्जा, हदय की आँखें, बारह सैनी, विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई। कहानी, एकांकी गीत, गजल और कविताएँ भी लिखी।

1957 में डॉ. वेद प्रकाश बटुक, का त्रिविधा कविता संग्रह छपा था। इसी दौर में दमोदर प्रसाद सिंघल और उनकी पत्नि देवहुति के लेख भारत की पत्र–पत्रिकाओं में छपें। इतिहासकार डॉ. बी.एन.पाण्डेय का उपन्यास 'शहरों के कुत्ते' का प्रकाशन भी हुआ। उन्हीं दिनों कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. रेमण्ड आर्चिन ने तुलसीदास की कवितावली और गीतावली का हिन्दी अनुवाद किया।

1958 में सत्येन्द्र श्रीवास्तव तथा 'सुराही' के रचनाकार गजलकर प्राण शर्मा की रचनाऐं भारत की पत्र–पत्रिकाओं में छपती रहीं। सत्येन्द्र श्रीवास्तव की कविता 'सर विस्टन चर्चित मेरी माँ' टेन्स में 'गंगा की धार', भारतीयों की संघर्ष गाथा, बेगम समरू (नाटक)' कंधों पर इन्द्रधनुष' (यात्रा डायरी) इत्यादि हिन्दी साहित्य की धरोहर कृतियाँ है।

सत्येन्द्र के समकालीन अमेरिका में निवासरत् वेद प्रकाश बटुक एक पत्र में लिखते है–1951 म ब्रिटेन में अध्ययन के लिये आए। हरिवंशराय बच्चन की प्रेरणा से 'हिन्दी परिचय लंदन' की स्थापना की गयी, जिसमें कहानी, कविता लेख पढ़े जाते थ। मिडलैंड में रहने वाली विजया मायर के के चार उपन्यास 'रिश्तों की बंधन (1988) 'टूटते दायरे (1989)' तूफान से पहले' (1994) और 'तपस्या' (1995) में प्रकाशित हुयें। से सभी उपन्यास भारतीय स्त्रियों की दुर्दशा, अंधविश्वास, सामाजिक, संर्कीणता और छूआछूत आदि विषयों पर लिखे गये थे।

इसी बीच ब्रिटेन में निवासरत् पंजाबी लेखिका कैलाशपुरी का पंजाबी में लिखा उपन्यास 'सूजी' हिन्दी में अनूदित हुआ। इसी तरह मिडलैड में रहने वाले बुल्वर हैम्पटन के स्वर्ण चंदन का प्रसिद्ध उपन्यास 'कंचका' और कहानी संग्रह 'फी सोसायटी' हिन्दी म अनूदित हुआ। सुरेन्द्रनाथलाल की तीन भाषाओं में अनूदित टीका सहित भगवद्गीता भारत से छपकर लंदन आई। सन 1982 में बी.बी.सी. लंदन प्रसारण से संबद्ध होकर आये गौतम सचदेव की कई कृतियॉ भारत में प्रकाशित हुई। श्री गौतम साहित्य की विभिन्न विधाओं में प्रभावशाली लेखन– 'साढ़े सात दर्जन पिंजरें' अटका हुआ पानी' अधर का पुल' इत्यादि संग्रह प्रकाशित हुए। 1987 में लंदन आई कहानी लेखिका अचला शर्मा का 'सूखा हुआ समुद्र' कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ। 1985 में दिव्या माथूर की कहानियाँ नव–भारत टाइम्स, कादम्बिनी इत्यादि में छपी।

सन् 1990–91 में लक्ष्मीमल्ल सिंघवी ब्रिटेन में हिन्दी के इतिहास के युग प्रवर्तक है। उन्होने अपनी पत्नि के साथ मिलकर अपने घर पर ही अनौपचारिक साहित्यिक गोष्ठियों और चर्चाओं द्वारा सुस्त एवं अवरूद्ध लेखनियों को गतिशीलता प्रदान की। पदमेश गुप्त ने भारत के स्वाधीनता दिवस की 50 वों वर्षगाठ पर काव्य संकलन 'दूरबाग में सोंधी मिट्टी प्रकाशित किया, जिसमें ब्रिटेन के 25 कवि शामिल थें 1997 में साहित्यिक पत्रिका 'पुरवाई' के प्रकाशन में हिन्दी लेखकों को एक संबंल मिला। गद्य विविध विधाओं में रचनाकारों की कहानी सक्रिय हो उठी।

स्वतंत्रता के बाद ब्रिटिश हिन्दी लेखक प्राण शर्मा की पहली कहानी 'पराया देश' 1982 में अगस्त अंक कादम्बिनी में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कहानी प्रतियोगिता में सांत्वना पुरस्कार से सम्मानित हुई। ब्रिटिश हिन्दी कहानियों के विषय में रामदरश मिश्र लिखतें ह कि ''किसी स्थान विशेष के लेखकों की रचनाऐं होने मात्र से उन्हें वैशिष्ट्य प्राप्त नही होता, उन्हें वैशिष्ट्य इस लिये प्राप्त होता है कि वे स्थान विशेष के जीवन को अपने रंग में उभारती है और इस तरह वे उस भाषा में लिखे जा रहें साहित्य के अनुभव को नय आयाम प्रदान करती है। विदेशों में रह रहें भारतीय मूल के लोगो में देश की यादे बची रहती है, रह–रहकर उभरकर पेरशान करती है। देश की असुविधाऐं और विदेश की सुविधाऐं इन्ही द्वन्द्वात्मक स्थिति में उनके मस्तिष्क पटल पर रचनाओं के रूप में उभार आता है। सूरज प्रकाश द्वारा संकलित 'कथादशक' दूसरा उषा वर्मा का 'सांझी' कथा यात्रा' (2003 वाणी प्रकाशन दिल्ली) जिमसें 12 हिन्दी–उर्दू की महिला कथाकार सम्मिलित है। तीसरा संकलन है–'प्रवास में पहली कहानी' (2008 वाणी प्रकाशन दिल्ली) इसमें भी हिन्दी–उर्दू की 18 महिला कथाकार सम्मिलित है। ब्रिटेन की पहली हिन्दी साहित्यिक पत्रिका 'पुरवाई' का प्रकाशन यू.के. हिन्दी समिति द्वारा पांडुलिपि चयन 'कथा' यू.के. द्वारा सम्मान, विश्व हिन्दी सम्मलेन एवं क्षेत्रीय हिन्दी सम्मेलन आदि में ब्रिटेन में लिखे जा रहें साहित्य को देश–विदेश में पहचान दिलाने में सक्रिय सहयोग दिया।

'पुरवाई' में प्रकाशित दिव्या माथूर की मणि और उषा राजे की 'एक मुलाकात' कहानियॉ 80 की दशक में प्राण शर्मा और स्वर्णचंदन के नस्ल और रंगभेद के विषयों से आगे की कहानियॉ हैं जो मानवीय संवेदनाओं, संस्कृति समन्वयक और नये यथार्थवाद की प्रस्तावना हैं। 1998–89 में ब्रिटेन माइग्रेट करने वाले हेमेन्द्र शर्मा की तीन कहानी संग्रहों में 'देह की कीमत' ने ब्रिटेन साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान बनाया। ब्रिटेन के हिन्दी लेखकों की लगभग 708 पुस्तकों की कैटलॉगिंग हो चुकी है, जिनमें 24 उपन्यास, 70 कहानी संग्रह, 212 काव्य संग्रह, 12 एकांकी एवं अन्य विधाओं में लिखकी पुस्तकें शामिल है।

तुर्की के नोबेल पुरस्कार विजेता लेखक आरेहान पामुक की रचनाएँ बिल्कुल अलग शिल्प और शैली के कारण चर्चा में रही है। प्रसिद्ध रंग निर्देशक मोहन महर्षि ने उनकी संस्मरणात्मक पुस्तक 'इस्ताबुल' पर आधारित 'मैं इस्ताबुल हूँ नाम से एक प्रस्तुति तैयार की थी। पामुक के जीवन और रचनाओं पर उनकी ही टिप्पणी है– ''मैं अपने चारों और बिखरे संसार को देखकर शब्द नही गठता, मैं ऐसा लेखक हूँ जो शब्दों के माध्यम से दुनिया को देखता हूँ।''

पाकिस्तान के युवा लेखक राशिद अशरफ की पहली कहानी 'खुदकुश' हिन्दी में 'अकार' पत्रिका में प्रकाशित हुई। अशरफ के गैस, तेल पर्यावरण आदि विषयों

पर विभिन्न पत्रिकाओं में लेख छपे है। नीदरलैंड में निवासरत् डॉ. पुष्पिता अवस्थी–वरिष्ठ कथाकार एवं साहित्यकार है। विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में कहानियॉ लेख छपे हैं।

मारिशस के युवा साहित्यकार अनंत अभिमन्यु अपनी भाषा के प्रति गहरे लगाव का प्रकट करते हुए कहा है– ''मेरे दोस्त, उस भाषा में मेरे लिये शुभ की कामना मत कर, जिसकी गुलामी के दिनों की याद दे जाती है। चाबक की बौछारों का आदेश निकलता था जिस भाषा में उस भाषा को मेरी भाषा मत कह मेरे दोस्त।''

विषय का अंत नही है बहुत कुछ लिखा और पढ़ा जा सकना शेष है। भारतीय साहित्य पर प्रभाव डालने वाले विदेशों में निवासरत् भाषाविद्, वैज्ञानिक, साहित्यकारों का हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं में योदान रहा है। जिससे निश्चित ही भारतीय साहित्य में अभिवृद्धि हुई।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हंस –मार्च 2012
2. हंस – जुलाई 2012
3. हंस – अक्टूबर 2012
4. कथादेश – अपल 2012
5. कथादेश – सितम्बर 2012
6. रचना – मार्च – अप्रैल 1998
7. रचना – अगस्त–सितम्बर 1998
8. रचना – सितम्बर–अक्टूबर 2001
9. रचना – सितम्बर से दिसम्बर 2008
10. साहित्यिक निबंध – राजनाथ शर्मा
11. साहित्य का सच– साधना अग्रवाल
12. हिन्दी अनुसंधान– डॉ. विजयपाल सिंह